

76

जनवरी-जून, 2019

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN 0974-0066

(अंक-76, जनवरी-जून, 2019)

संरक्षक

प्रो. राघवेन्द्र पी. तिवारी

कुलपति

प्रधान सम्पादक

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

सम्पादक

प्रो. भवतोष इन्द्रगुरु

प्रो. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव

डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. छबिल कुमार मेहेर



डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (मध्यप्रदेश) - 470003

दूरभाष : (07582) 297133

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

सम्पादकीय परामर्श मण्डल

- प्रो. पी.के. राय
- प्रो. ए.एन. शर्मा
- प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी
- प्रो. अशोक अहिरवार
- प्रो. दिवाकर राजपूत
- प्रो. डी.के. नेमा
- प्रो. नागेश दुबे
- डॉ. अनुपमा कौशिक
- डॉ. प्रकाश जोशी

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

अंक-76, जनवरी-जून 2019

ISSN 0974-0066 (पूर्व-समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिका)

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

UGC Care List, Group-C (Multi disciplinary), Sl.no.-15

प्रकाशित रचनाओं के अभिमत से डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
या सम्पादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है।

सम्पादकीय पत्र व्यवहार :

मध्य भारती

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर - 470003 (म.प्र.)

दूरभाष : (07582) 297133

ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.com

आवरण : डॉ. छबिल कुमार मेहेर

मुद्रण :

अमन प्रकाशन

कटरा नमक मंडी, सागर (म.प्र.)

सदस्यता शुल्क	आजीवन	
	प्रति अंक	रु. 2000/-
व्यक्तिगत	रु. 150/-	रु. 2000/-
संस्थागत	रु. 200/-	रु. 4000/-

The Economic Benefits of Tourism for Developing Countries : An Analysis 201
Sanjay Barolia

Yoga : Global Value for Peace and Harmony 207
Sushim Dubey

बीच बहस में अस्मिता और अन्यता 211
प्रशान्त शुक्ला

बुंदेली लोकगीतों में बुन्देलखण्ड की संस्कृति के तत्त्व 217
पंकज सिंह

बुंदेली लोकगीतों में बुन्देलखण्ड की संस्कृति के तत्त्व*

पंकज सिंह

सामान्यतया जब हम इतिहास की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य उन घटनाओं की खोज और अध्ययन से होता है जो अतीत में घटित हुई। अध्ययन की प्रक्रिया में हम घटनाओं की पृष्ठभूमि में काम कर रहे हैं कुछ विशेष प्रवृत्तियों को भी लक्षित कर पाते हैं और इस तरह मनुष्य की यात्रा की प्रकृति और उसके लक्ष्य को पहचानने की कोशिश भी करते हैं सामान्य अर्थों में इसे ही इतिहास-दृष्टि कहा जाता है। प्रत्येक दर्शक-पद्धति एक इतिहास-दर्शन का भी विकास करती है यानी इतिहास को समझने को समझने की एक दृष्टि हमें देती है। इसे यों भी कह सकते हैं कि ऐतिहासिक तथ्यों के अध्ययन से ही एक जीवन-दर्शन का बोध विकसित होता है क्योंकि इतिहास वस्तुतः मनुष्य के होने का इतिहास है और इसलिए मनुष्य की अपनी पहचान भी इतिहास में से ही उभरती है।

सामान्यतया हम केवल उन घटनाओं और तथ्यों को ही इतिहास के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं जिनका पूरे मानव समाज या उसके किसी एक अंश-देशबद्ध या कालबद्ध अंश-पर कोई बुनियादी असर पड़ा। जब हम इतिहास का अध्ययन करते हैं तो उन तथ्यों और घटनाओं का अध्ययन कर रहे होते हैं जिन्होंने स्वयं चेतना को प्रभावित किया हो या जिनके माध्यम से हम चेतना की यात्रा के किसी नए कदम को देख पाते हैं यदि ऐतिहासिक तथ्य का तात्पर्य वह तथ्य है जिसने मानव की चेतना को प्रभावित किया हो तो हमें अपनी ऐतिहासिक सामग्री पर पुनर्विचार करना होगा और यह प्रकारांतर से हमारी इतिहास-दृष्टि का भी पुनः परीक्षण करना होगा। एक इतिहास वह है जो पुरातात्विक और पुरालेखीय सामग्री के आधार पर समझा जाता है। विविध ऐतिहासिक ग्रंथों, दस्तावेजों, अभिलेखों और अन्य प्राचीन कलाकृतियों-औजारों आदि के आधार पर हम ऐतिहासिक तथ्यों का निरूपण करते हैं, और उन्हीं का अध्ययन कर मनुष्य की यात्रा को, उसकी गति को तीव्र करने वाली और उसमें बाधा डालने वाली दोनों ही प्रकार की प्रवृत्तियों और परिस्थितियों को समझने का यत्न करते हैं। लेकिन ऐसी बहुत-सी बातें हैं जो मानव-समाज की चेतना में तो रहती हैं, लेकिन उनके लिए कोई पुरातात्विक या पुरालेखीय आधार हमें प्राप्त नहीं होता। इतिहास के वैज्ञानिक अध्ययन का दावा करने वाले इतिहासकार उन तथ्यों या घटनाओं को कपोलकल्पित या किंवदंती मानते हैं जिनका कोई पुरातात्विक वा पुरालेखीय प्रमाण नहीं मिलता-चाहे लोकमानस में उनकी कितनी ही गहरी छाप पड़ी हो। इतिहास का अध्ययन यदि मनुष्य की चेतना की यात्रा है और उस पर पड़े प्रभाव का अध्ययन है तो हमें उन घटनाओं को अधिक महत्व देना होगा जो हमारी चेतना में अभी भी अस्तित्वमान हैं।

*समीक्ष्य पुस्तक : बुन्देलखंड की संस्कृति, प्रो. बी.के. श्रीवास्तव (2019), राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, मूल्य 550/-

मध्य भारती-76, जनवरी-जून, 2019, ISSN 0974-0066, pp. 217-230

यूजीसी केयर लिस्ट, ग्रुप-सी (मल्टीडिसिप्लिनरी), क्र.सं.-15